कौशल विकास

डॉ0 रतन कुमार
ललित कला विभाग
ललित कला संकाय,
ल0वि0वि0, लखनऊ

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र भारत में कौशल विकास के महत्व पर चर्चा करता है, साथ ही यह देश में कुशल शिल्प कौशल के ऐतिहासिक महत्व को उजागर करता है। भारत में कौशल विकास एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिसका उद्देश्य बेरोजगारी की समस्या को दूर करना और युवाओं को स्वरोजगार एवं तकनीकी दक्षता प्रदान करना है। ग्रामीण अंचलों के पारंपरिक हस्तशिल्प कुटीर उद्योग और लघु उद्योगों का प्रोत्साहन इसके लिए अनिवार्य है। भारत की सांस्कृतिक धरोहर और शिल्प कला अत्यधिक समृद्ध रही, लेकिन आधुनिकता और तकनीकी कौशल के अभाव से यह परंपरागत शिल्प कला विलुप्त होने की कगार पर है, जिसका उदाहरण बनारस की साड़ियां, रामपुर के चाकू, खुर्जा के मिट्टी के बर्तन आदि हैं, जो आज भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं उनसे लगा सकते हैं। इसे पुनर्जीवित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर और लघु उद्योगों के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा योजनायें लागू की जा रही हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से कौशल विकास के महत्व एवं इसकी आवश्यकताओं पर चर्चा करते हुए कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं। जैसे– तकनीकी शिक्षा और कौशल मिशन के माध्यम से युवाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें बेराजगार के नये अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। इसके साथ ग्रामीण उत्पादों का प्रचार–प्रसार, बाजार उपलब्धता और तकनीकी दक्षता में सुधार आवश्यक है, साथ ही कार्यालय, पर्यटन स्थलों और शोरूम के माध्यम से इन उत्पादों की मांग बढ़ाई जा सकती है। आज की डिजिटल दुनिया में इंटरनेट और सोशल मीडिया का उपयोग कर ग्रामीण उत्पादों को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया जा सकता है। इसके साथ ही तकनीकी प्रशिक्षण और रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को रोजगार के लिए प्रेरित किया जा सकता है। चीन और जापान जैसे देशों के हस्तशिल्प तकनीक से प्रेरणा लेते हुए भारत में तकनीकी दक्षता को बढ़ावा देना जरूरी है। प्रधानमंत्री और अन्य नेताओं द्वारा कौशल विकास मिशन की चर्चा में इसे प्रमुखता दी है। हालांकि इसे सफल बनाने के लिए योजनाओं को प्रभावी रूप से कार्यान्वित करना, बैंक ऋणों की उपलब्धता सुरक्षित करना और युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना आवश्यक है। सरकारों को ईमानदारी से योजनाओं को लागू कर बैंकिंग और वित्तीय सहायता के माध्यम से प्रशिक्षित युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। कौशल विकास के साथ–साथ भारतीय संस्कृति और परंपरागत रोजगार के साधनों को सहेजना आवश्यक है ताकि ग्रामीण भारत विकासशील और समृद्ध बन सके। ग्रामीण कारीगरों की कुशलता को उन्नत करने और बाजार में प्रतिस्पर्धा में बनाये रखने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग जरूरी है। यदि इसे प्रभावी रूप से लागू किया गया तो भारत के केवल बेरोजगारी की समस्या को हल कर सकता है, बल्कि अपनी पारंपरिक कला और संस्कृति को हुई सुरक्षित कर सकता है।

17वीं लोकसभा चुनाव के बाद जब से माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी (नरेंद्र मोदी) के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केंद्र में सरकार बनी है तब से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के विकास के लिए विभिन्न तरह की योजनाएं बनाई जा रही हैं। प्रधानमंत्री अपने तमाम भाषणों एवं आकाशवाणी रेडियो

द्वारा प्रचारित कार्यक्रम ''मन की बात'' में भी देश के विकास, शिक्षा, युवा के लिए शिक्षा व रोजगार, ई गवर्नेंस नदियों एवं जल स्रोतों के सफाई एवं संरक्षण आदि के लिए गंभीरता से अपने विचार व्यक्त करते हैं।

प्रधानमंत्री को एक विशेष चिंता बेरोजगार शिक्षित युवाओं को रोजगार देने की है, जिसके लिए वह हमेशा अपने विचारों में कौशल विकास मिशन की बात करते हैं।

कौशल विकास का तात्पर्य है कि कुशल कारीगर एवं उन्नत एवं विकसित कारीगरी है, जो अपने देश में लगभग नहीं के बराबर हैं। आवश्यकता है कौशल विकास मिशन के तकनीक प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण शिल्प एवं कुटीर उद्योग लघु उद्योग आदि को जोड़कर और विस्तृत कर ग्रामीण जीवन रेखा रोजगार को सहेजना है। महात्मा गॉधी के एक विचार की याद आ रही है। उन्होंने कहा था देश का विकास होना चाहिए मगर लघु उद्योग नहीं समाप्त होने चाहिए। विकास के साथ–साथ हमारे लघु उद्योग परंपरागत उद्योग उजड़ गए और इसके कारीगर दूसरे कार्य या मजदूरी करने के लिए मजबूर हो गए और जनसंख्या वृद्धि के साथ बेरोजगारी की समस्या भी बढ़ती जा रही है जो सरकार व देश के सामने एक बड़ी समस्या बनकर खड़ा है। लाखों युवा पढ़ाई आदि पूरी कर नौकरी के तलाश में दर–दर भटक रहे हैं और निजी संस्थाओं एवं कम्पनियों के शोषण के भी शिकार हो रहे हैं।

भारतवर्ष ऐसा देश रहा है कि जहॉ कौशल की कमी नहीं थी प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का अध्ययन करें तो हमें प्राप्त होते हैं यहॉ के निवासी कुशल हस्तगत थे। इसके उदाहरण सिन्धुघाटी की सभ्यता, मोहनजोदड़ों के प्राप्त अवशेषों में देखी जा सकती है। जैसे सिन्धुघाटी सभ्यता के प्राप्त मृण्डभाड़, वास्तुकला के अवशेष, मृण्डमूर्तियों इत्यादि इसके बाद के इतिहास के जैसे महाबलीपुरम् कोर्णाक के सूर्य मन्दिर, अजन्ता एलोरा, खजुराहो के मन्दिर आदि अद्भुत उदाहरण हैं। आजादी के पूर्व तक हमारे देश के हस्तकला एवं लघु उद्योग पर ग्रामीण जनजीवन रचा बसा था।

कौशल की बात करें तो आज के 100 वर्षों पूर्व निर्मित किसी इमारत के निर्माण की शैली, कारीगरी, ईंटो की चिनाई, झरोखे, दरवाजे आदि का निर्माण अद्भुत है। उदाहरण के तौर आज भी कई इमारत, खण्डहर मुगलकालीन एवं राजपूताना शैली के निर्मित भवनों के निर्माण की गयी आंतरिक साजसज्जा, अलंकरण, प्रकाश, मौसम रोधी तरनिक से लैस बनाये गये जो इनके कुशल कारीगरी एक तकनीक दक्षता का प्रमाण है। इसके अलावा गॉव के छोटे–मोटे कार्य जैसे (सुतली द्वारा) चारपाई की बिनाई, टोकरी बनाना, बांस द्वारा निर्मित टोकरी हाथ के पंखे। गेहूँ के डन्ठल द्वारा हाथ के पंखे बनाना, ताड़ के पत्तों द्वारा बच्चों के छोटे–छोटे खिलौने सीटी, मिट्टी के तरह–तरह की मूर्ति खिलौने हथकरघा द्वारा निर्मित वस्त्रों को कारीगरी देखते बनती थी। आज जिनके उदाहरण किसी संग्रहालय में मिल सकते हैं।

विकास के अन्धी दौड़ में हम अपने बहुत सारे चीजों को भूलते जा रहे हैं जिसका परिणाम है कि अपनी संस्कृति सभ्यता एवं परम्परागत रोजगार के साधनों को छोड़ते जा रहे हैं।

दिनांक 18.09.2015 को प्रधानमंत्री अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के दौरा के के दौरान वाराणसी डीरेका मैदान में एक जनसभा को संबोधित करते हुए समय कई घोषणों के साथ एक नए सेक्टर अथवा पार्टनरशिप की बात की। इनके भाषण की विशेष बात यह थी कि 15 करोड लोगों को कुछ नई तकनीक प्रशिक्षण के साथ बैंकों द्वारा 10 से 50 हजार के लोन देकर और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद एवं बाजार विकसित

किया जाना, जिससे गरीब जनता एवं ग्रामीण अपने लिए स्वरोजगार विकसित कर अपने परिवार के पालन पोषण के अलावा भारत की अर्थव्यवस्था के सुधार में भी सहयोग कर सकता है।

आज देश के सामने बड़ी समस्याओं में एक बेरोजगारी की बड़ी समस्या है। इसका एक ज्वलन उदाहरण का जिक्र आ रहा है। अभी उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी चपरासी के 68 पद के लिए आवेदन मांगे थे जिसके लिए आवेदन 23 लाख आए हैं। इस 23 लाख में 255 छात्र पीएचडी धारक हैं शेष उच्च योग्यता वाले 15 लाख छात्र हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के अधिकारी इनके साक्षात्कार कराने से हाथ खड़े कर दिए। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि देश में युवा बेरोजगारों की समस्या कितनी भयावह है।

राज्य सरकार व केंद्र सरकार का हर योजनाओं का सफल क्रियान्वयन होता है, जैसे–बंगाल की खाड़ी, उड़ीसा के पट चित्र, वाकुरा के टेराकोटा शिल्प, आसाम के वेंत और वांस के बने शिल्प, कश्मीर के ऊनी वस्त्र पर की जाने वाली अद्भुद डिजाइन, भदोही के कालिन, गुजरात के कलमकारी आदि। भारतीय परम्परा एक तीज त्यौहार मेले आदि के हिसाब से भी बहुत कुछ शिल्पों का निर्माण किया जाता रहा है। परन्तु आधुनिकता की अंधी दौड़ में धीरे–धीरे हमारे परम्परागत हस्त शिल्प मृतप्रायः होते गये।

हस्त कौशल विकास से सिर्फ रोजगार ही नहीं बल्कि देश, प्रदेश, जिले, शहर आदि का नाम भी उसे वस्तु के निर्माण कारण जाना जाता है और उसकी अपनी पहचान होती है। जैसे अलीगढ़ के ताले, रामपुर के चाकू, फिरोजाबाद की चूड़ियां, खुर्जा के चीनी मिट्टी के बर्तन, गोरखपुर के टेराकोटा, बनारस की साड़ी, लखनऊ के चिकन वस्त्र आदि। उसी कुशल कारीगरी से राष्ट्रपति/ प्रधानमंत्री/ मुख्यमंत्री या संबंधित विभाग के मंत्रियों द्वारा भी सम्मान/ पुरस्कार भी पाते हैं। परंतु दुर्भाग्य की बात है कि आज की युवा पीढ़ी इन परंपरागत कार्यों को नहीं करना चाहती है ना ही इसे लेकर उसके मन कहीं इज्जत है जिसके कारण देश ग्रामीण क्षेत्र बिना पढ़े लिखे बेरोजगार युवक बिना किसी हुनर के मजदूर बनने के लिए विवश हैं।

कौशल विकास के लिए एवं युवकों को स्वरोजगार संपन्न बनाने के लिए केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा तमाम प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं परंतु वह महज सरकारी कार्यक्रम की खानापूर्ति मात्र होता है।

आज की आधुनिकता में बाजार में उपलब्ध चमक– दमक से सजी वस्तु लोगों को आकर्षित करती हैं, जबकि ग्रामीणों द्वारा निर्मित वस्तु आधुनिक चमक से दूर शुद्ध रूप से देशी होती है। इसका सबसे जीता–जागता उदाहरण 'गांधी आश्रम' एवं 'ग्रामोदय संस्थायें' हैं, जिसका उत्पाद कम मात्रा में लोगों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। जहां ग्रामीणों द्वारा हस्त निर्मित वस्तुओं का प्रयोग पिछड़ी सभ्यता समझी जाती है।

आज आवश्यकता है कौशल विकास के माध्यम से देश युवाओं को रोजगार सृजन किया जाए और मृतप्रायः हो चुकी अपनी भारतीय संस्कृति को सहेज कर सुरक्षित किया जाए।

परन्तु मन में संदेह भी जन्म ले रहा है कि कहीं केन्द्र सरकार/राज्य सरकार की अन्य विकासशील योजनाओं की तरह इसका भी वही हश्र न हो कि केवल एक विज्ञापन या भाषण तक सीमित रहकर समाप्त न हो जाय। भारत की सफाई का हाल वहीं का वहीं है। जरूरत है कि जागरूकता की।

उद्योग जगत के लोग एक कारपोरेट घरानों द्वारा भी कौशल विकास के कार्य में सहयोग कर आगे बढ़ाकर भारत युवा बेरोजगारों की मदद कर सकते हैं। आफिस आदि में ग्रामीण उत्पादों के सजावटी सामानों को जगह देकर हस्तशिल्प कारीगरों की मदद की जा सकती है। इसके साथ ही साथ केन्द्र व राज्य सरकारें

अपने कार्यालयों/गेस्ट हाऊस आदि में ग्रामीण उत्पाद की जरूरत के सामानों को अनिवार्य रूप से प्रयोग में बाध्य करें। इसके अलावा रेलवे/बस अड्डे/पर्यटक स्थल आदि जगहों पर स्थानीय ग्रामीण हस्तशिल्प उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए शो रूम/हाट आदि के द्वारा कुशल कारीगरों की मदद की जा सकती है।

आज के आधुनिक युग में इन्टरनेट/बेवपेज/सोशल मीडिया आदि द्वारा भी ग्रामीण उत्पादों का प्रचार–प्रसार कर देश–विदेश से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुॅचाकर इनके रोजगार को बढ़ाया जा सकता है।

आज आवश्यकता है कि ग्रामीण अंचलों के लघु कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर एवं युवा पीढ़ी को उनके रूचि के अनुरूप प्रशिक्षित कर रोजगार को बढ़ावा दें। जैसा कि चीन, जापान आदि देशों के हस्तशिल्प काफी सुन्दर एवं तकनीक दक्षता पूर्ण हैं और सरकार द्वारा उनके बढ़ावा हेतु उपाय भी किये जाते हैं। यह मुझे एक और उदाहरण का जिक्र करना चाहूंगा जिसका मैं स्वयं प्रत्यक्ष गवाह हूॅ। 2012 अक्टूबर में मेरी एक एकल प्रदर्शनी त्रिवेणी कला संगम था उसी दौरान जापान का एक कुशल हस्तगत महिलाओं का दल दिल्ली के राष्ट्रीय ललित कला अकादमी रवीन्द्र भवन की समस्त गैलरी में जापान में बने वाली तरह पारम्परिक खिलौने जैसे सूमों जापनी ग्रामीण महिलायें कुछ विभिन्न तरह के पेड़–पौधे, जानवर इतनी कुशलता से बनाये गये कि बर्वस ही सभी को आकर्षित करते थे और दर्शक बड़ी उत्सुकता से जापानी कुशलता को देखकर दंग रह जायें।

हमारे भारत में शिल्प कलाओं का भरमार है, परन्तु तकनीक कौशल एवं दक्षता का अभाव है।

जहॉ तक कौशल विकास की परिभाषा की बात है कौशल विकास का मतलब है तकनीकी विकास या कुशल कारीगरी, कुशल तकनीक का विकास सरकार द्वारा तकनीक विकास हेतु कुछ टेक्निकल कोर्स की एक सूची बनायी गयी जिसमें लगभग 160 ऐसे रोजगारपरक टेक्निकल विषय को लिया गया है जिसका यदि सभी प्रयोग एवं प्रशिक्षण दिया जाय तो शायद ही कोई युवा बेरोजगार रह पाये पर सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि इस विश्वास को सही रूप में जमीन पर उतारना। उदाहरण के तौर उ0प्र0 सरकार द्वारा राज्य के विभिन्न प्रदेशों जिलों में कौशल विकास केन्द्र की स्थापना कर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। लगभग 03 लाख युवक–युवतियों को प्रशिक्षण दिया गया है। अब आवश्यकता यह है कि प्रशिक्षित लाभार्थियों का प्लेसमेन्ट हो या स्वयं राजगार स्थापित करने हेतु बैंकों द्वारा आसान किश्तों पर ऋण उपलब्ध कराकर उसके जीवन यापन हेतु मदद की जाय।

आवश्यकता है किसी योजना को ईमानदारी से अमलीजामा पहनाने की। कार्य की पूर्णता के बगैर किसी लक्ष्य को हासिल नहीं किया जा सकता। स्वतन्त्रता भारत के लगभग 70 सालों में देश ने काफी क्षेत्र में विकास किया, परन्तु यदि ग्रामीण स्तर पर विकास के पैमाने देखने पर निराशा होती है, अभी भी बहुत कुछ करना शेष है। पौधे को जमीन में रोपना पड़ता है तब वृक्ष बनता है। उसके लिए विशेष वातावरण एवं उसके संरक्षण की आवश्यकता होती है। यदि विकासशील एवं विकसित देशों को देखा जाय तो विकास की शुरूआत उसके ग्रामीण अंचलों से किया जाता है, शहर जो अपने–आप विकसित हो जाते हैं।